P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-XII*August-2015

जन जातीय कला में संयुक्त आकारों का निरुपण

नमिता त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
ड्राइंग एण्ड पेंटिग विभाग,
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग आगरा

सारांश

मानव एव प्रकृति में युग्मता का सिद्धान्त व संयुक्त आकृतियों की संकल्पना सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्राचीन ग्रीक एव मिस्र की सभ्यताओं में भी बहुत सी ऐसी पौराणिक गाथाएँ व दृ"यात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं जा इस विचारधारा की द्योतक हैं। चीनी सभ्यता में यिन और यान का सिद्धान्त भी युग्मता व संयुक्त आकृतियों की अवधारणा को प्रद"िंत करता है। भारतीय पौराणिक गाथाओं में इस विचारधारा का प्रबल समर्थन मिलता है, जिसको कलाकारों ने अपने विषयानुरुप धारण किया एव प्रबल व रचनात्मक अभिव्यक्तियां प्रस्तुत की।

भारत अपनी भव्य एवं परम्परागत जन जातीय कलाओं के लिए वि"व में जाना जाता है, जो भारतीय कला एवं संस्कृति की अतुलनीय सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति करती हैं। दैनिक जीवन की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों के साथ साथ जन जातोय कलाओं मे इन संयुक्त आकृतियों की अवधारणा का निरुपण भी रचनात्मक रुप से प्राप्त होता है, अनेको माध्यमों जैसे चित्रकला, पत्थर व लकडो के "िाल्प, भित्ति चित्रण आदि के रुप में इन जन जातीय कलाकारों ने अपनी अभिव्यक्ति में इन अमूर्त अवधारणाओं को साकार किया है।

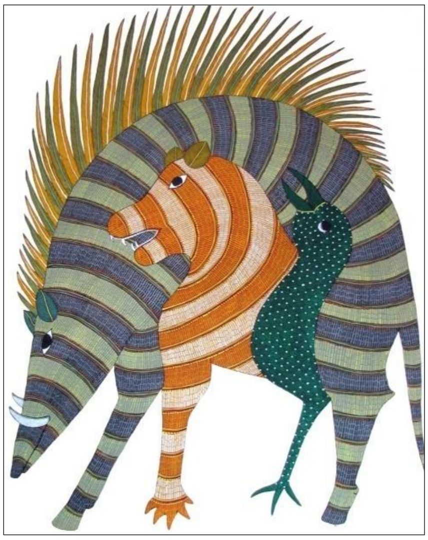

गोंड जन जातीय चित्र, संयुक्त पशु आकृति

मुख्य शब्द : जन जातीय, दृ"यात्मक, संयुक्त आकृतियां, पौराणिक, अमूर्त, यिन–यान, प"ु कूंजर, नव कूंजर।

प्रस्तावना

भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए विश्व में विख्यात है। विशिष्ट विशेषताओं एवं विभिन्न रसों को समेटे भारत देश के प्रत्येक क्षेत्र का कलात्मक स्वरूप विविधता लिए उन्मुक्त खड़ा है। जनजातीय कला परम्परागत कला के रूप में भारत के ग्रामीण अंचल से सम्बन्धित हैं, जो विभिन्न जन जातीय कलाकारों द्वारा बनाई जाती है। इनके द्वारा निर्मित इन शानदार कलाकृतियों ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत में एक नवीन अध्याय जोड़ा है जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को एक अन्तःदृष्टि प्रदान करता है।

भारतीय जन जातीय कला भारत के सामाजिक नियमों के साथ–साथ जीवन एवं मृत्यु की दार्शनिक विचारधारा को अपने रूपाकारों में प्रकट करती है। इनके द्वारा निर्मित कलाकृतियाँ युद्धों की महान गाथाओं का स्मरण दिलाती हैं, विवाहोत्सव, तीज त्यौहार, प्रेम एवं अन्य वह सभी परम्पराएँ जो भारतीय संस्कृति को विशिष्टता प्रदान करती हैं। उच्च गुणवत्ता लिये यह महान कलाएँ किसी भी समुदाय के एक एतिहासिक परिप्रेक्ष्य को प्रकट करती हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-XII*August-2015

अर्धनारीश्वर मधुबनी, बिहार

एक विशिष्ट जनजातीय परिवेश और सांस्कृतिक परम्परा की अन्तर्छाया में कोई जन जातीय कलारूप आकार लेता है, वह एक खास तरह की स्थानिकता और सांस्कृतिक बोध को अभिव्यक्त करता है, जैसा दूसरी किसी परम्परा में संभव नहीं होता। रूपों के बीच भी एक विशिष्ट अन्तक्रिया देखने में आती है। जन जातीय कला रूपों एवं जनजातीय आध्यात्मिक विश्वास का गहरा सम्बन्ध है। जन जातीय कलाए कल्पनात्मक मिथकीय और टोटमिक धारणाओं, प्रकृति और पितरों की विश्वास परम्पराओं तथा जनजातीय स्थानिक देवलोक आस्थाओं को प्रकट करती है। स्मृति एव चेतनागत जगत में सक्रिय इन अमूर्त प्रेरणाओं का प्रेक्षपण इनकी कलाओं में होता है। इनकी कलाओं में एक सांस्कृतिक परम्परा की समग्रता का बोध होता है जिसमें से होकर एक कला आकार ग्रहण करती है फिर चाहे वह कोई शिल्प हो, नृत्य हो अथवा चित्र।

अपनी रचनाधर्मिता को प्रदर्शित करने के लिये यह कलाकार अधिकतर प्रकृति पर आश्रित रहे हैं, जो कुछ भी उनके आस–पास था, कागज का टुकड़ा, कपड़ा, लकड़ी, मिट्टी, फेंके गये बेकार पदार्थ इन्हीं को इन कलाकारों ने माध्यम के रूप में स्वीकारा। घरों की दीवारों के रूप में इनके समक्ष विशाल कैनवास है, जिस पर यह अधिकतम अभिव्यक्ति करते हैं। फेकें गये रस्सी के टुकड़ों से सरगुजा कलाकार एक त्रिआयामी प्रभाव लिये कलाकृति का निर्माण करते हैं। बस्तर के जनजातीय कलाकारों ने लोहे के टुकड़ों को अपनी कलाकृति में प्रयुक्त किया। इन विभिन्न वस्तुओं को अपनी आवश्यकता के अनुसार कलात्मक माध्यम के रूप में परिवर्तित करना इनकी कलाओं को एक नया विस्तार देता है।

देवी, गोंड कला

जनजातीय कलाकार परम्पराओं, आस्थाओं, धारणाओं एवं महान पौराणिक आख्यानों से ही कला आकार ग्रहण करता है जो उसके दिन प्रतिदिन की जीवनचर्या को प्रभावित करते हैं। इनकी कलाएँ वैज्ञानिक अथवा शास्त्रीय कला की अभिव्यक्ति के सामान वैचारिक पृष्ठभूमि पर प्रतिष्ठित न होकर स्वाभाविक अभिव्यक्ति पर इसी विशिष्ट गुण ने जनजातीय कला की पैराणिक विचारधारा को एक नया आयाम दिया है जो एक साधारण मनुष्य के दृष्टिकोण से बहुत दूर है, जिसमें सूर्य और चन्द्रमा एक ही समय में उपस्थित हैं, पेड़ पशुओं के सिर से उग रहे हैं, पेड़ का तना मनुष्य आकृति में निर्मित है, इत्यादि।

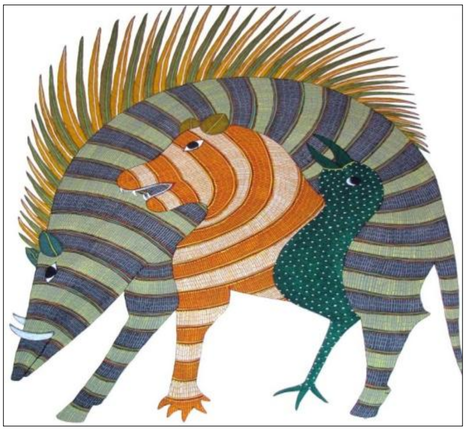

गौंड़ कलाकृति

भारतीय जनजातीय कला की यह प्रधान विशेषता रही है कि प्रकृति एवं भारतीय संस्कृति के विचार तत्वों से उत्प्रेरित है। प्रकृति एवं जीवनचर्या के दृश्यों के साथ धर्म एवं अध्यात्म की सूक्ष्म भावनाएँ भी इनके रचनात्मक रूपों में प्रकट हुई है। वह रूप जो जीवन तत्त्वों को उद्घाटित करते हैं तथा भारतीय संस्कृति की कल्याणकारो मूल्यों को प्रेषित करते हैं। जनजातीय कलाओं में संयुक्त आकृतियों की अवधारणा का निरूपण भी प्राप्त है। यह संयुक्त आकृतियाँ पशु एवं मनुष्य मिश्रित आकृति, नर एवं नारी मिश्रित आकृति एवं विभिन्न पशुओं की मिश्रित आकृतियों के रूप में संयोजित की गयी है, जो अपनी अभिव्यक्ति में पूर्णता समर्थ है। सभी प्राचीन

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-XII*August-2015

पौराणिक परम्पराएँ जैसे मिस्र, भारतीय, चीनी, इसाई एवं मध्य एशिया इस प्रकार की संयुक्त आकृतियों को स्वीकार करती है। भारतीय कला रूपों में अर्धनारीश्वर, हरी–हरा, नर सिंह, नागकन्या, नागदेवता, नवकूंजर आदि के रूप में चित्रित की गयी है।

भील कलाकृति

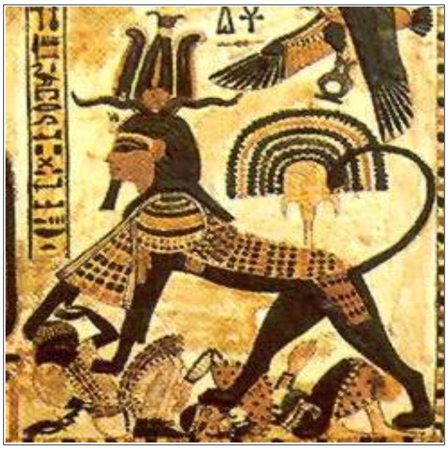

मिश्रित आकृति, प्राचीन मिस्र एवं मध्य एशिया

संयुक्त आकृति, कराबाद, भोपाल

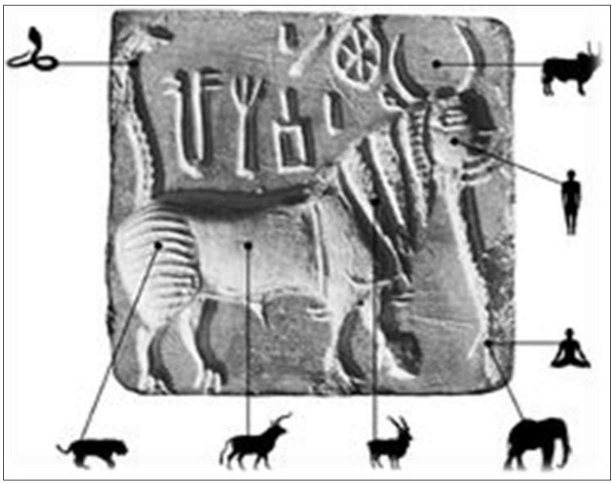

संयुक्त आकृतियों के निरूपण कि यह परम्परा भारतीय चित्रकला में अति प्राचोन रूप में विद्यमान है। कराबाद, भोपाल स्थित शैलाश्रयों में हमें इस प्रकार की आकृति का अंकन प्राप्त होता है, जिसमें मनुष्य आकृति के धड़ पर प"ाु का सिर चित्रित किया गया है। सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त विभिन्न मोहरों पर भी हमें मिश्रित आकृतियाँ प्राप्त होती हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि यह अवधारणा अति प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में विद्यमान है।

मौर्य कालीन कला में हमें संयुक्त आकृतियों की इस वि"ाष्ट अवधारणा का निरूपण प्राप्त होता है जिससे पूर्ण रूप से भारतीय संस्कृति की इस अवधारणा को प्रकट किया गया है कि संसार के प्रत्येक जीवित प्राणी में जीवन रूपी तत्व की एकता है। इसे कलाकारों ने अपनी सृजनात्मक क्षमता से भरहुत एवं सांची के कला मूर्तनों में प्रकट किया है। विभिन्न प"ाुओं की आकृतियों को एक आकृति में गूथ कर एक वि"ाष्ट आकृति का मूर्तन इस अवधारणा का सफल निरूपण है।

संयुक्त आकृति, भरहुत

भारतीय लघुचित्रण शैली में भी मिश्रित आकृतियों का अंकन कलाकारों ने अत्यन्त रचनात्मकता के साथ किया है, जिसमें विभिन्न प”ाुओं को मिलाकर एक प”ाु आकृति को निर्मित किया गया है जिसे ''प”ाु कूंजर'' व ''नव कूंजर'' के रूप में जाना गया। ''नव कूंजर'' में नौ प”ाुओं को मिश्रित रूप में चित्रित किया गया है।

जनजातीय कला रूपों में भी इन आकृतियों का अंकन प्राप्त होता है यह दो रूपों में है एक पौराणिक कथाओं में संदर्भित दूसरा काल्पनिक रूपों से सम्बन्धित। जनजातीय कला प्रकृति के प्रति अति संवेदनशीलता रही है। सम्पूर्ण जनजातीय कलाकार एवं प्रकृति इस कलात्मक अभिव्यक्ति एक दूसरे में गुथे हुए से प्रतीत होते हैं जो इस कला के अस्तित्व का आवश्यक अंग है। वह प्रकृति को पूर्ण आत्मिक भावुकता के साथ प्रस्तुत करते हैं। गौड़ जनजातीय कलाकार अपने चित्रों में पशु आकारों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं जैसे कोई अपने बच्चों से प्रेम प्रदर्शित करता है। आकर्षक रंग योजना, पशुओं की अभिव्यक्ति में अक्रामकता न होकर एक शान्त विचार प्रकट होते हैं। इन आकृतियों को एक दूसरे के ऊपर बनाना तथा मिश्रित पशु आकृतियों की अभिव्यंजना भी इस कला में प्रदर्शित है। गौड़, भील, वारली, मधुबनी आदि कलाओं में इन रूपों की अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल रूपाकारों को प्रदर्शित करती है।

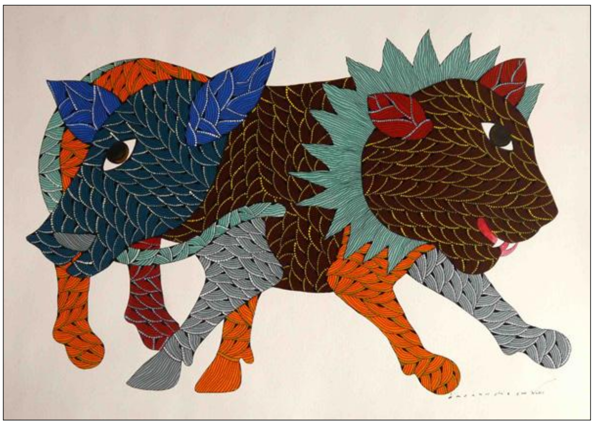

मिश्रित पशु आकृति, गौड़

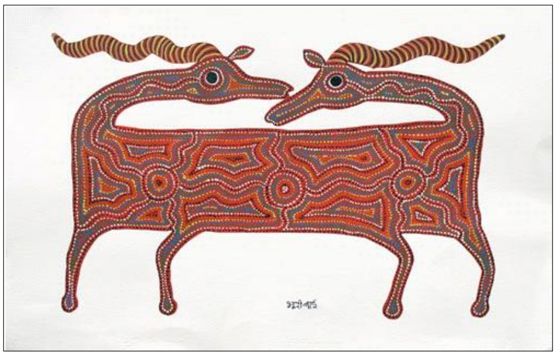

मिश्रित पशु आकृति, गौड़ व भील

गौड़ कला में पशुओं की विभिन्न मिश्रित आकृतियाँ प्राप्त होती हैं जिनमें दो, तीन अथवा चार पशुओं को एक ही रूपाकार में दर्शाया है, वहीं जलचर एवं आकाशचारी पक्षी को भी सुमेलित किया है। इस प्रकार के चित्रों की संख्या कम है परन्तु अपनी अभिव्यंजना में यह अपने विशेष स्वभाव को प्रस्तुत करती हैं एवं कई बार यह आकृतियाँ अत्याधिक विरूपता को प्राप्त करती है। यह चित्र अपनी विलक्षण भावयोजना के कारण एक नवीन एवं रचनात्मक स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X
Vol-II * Issue-XII*August-2015

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Mythical animal in in Indian Art, by Krishna Murthy.
2. The Transformation of Nature into *Art,* by *Kapila Vatsyayan*.
3. Indian Miniature Painting, Manefestation of a creative mind, Dr. Daljeet and Prof. P.C. Jain, Published, by Brijbasi art Press Ltd., 2006.